

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 5 अध्याय 24: राहु और पाताल-लोक

22 September 2026

🙏 पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



सुतल के देदीप्यमान लोक में महान् भक्त राजा बलि शान्ति से निवास करते हैं — क्योंकि साक्षात् परमेश्वर श्रीनारायण, हाथ में गदा लिए, उनके द्वार पर रक्षक बनकर खड़े हैं, उनका हृदय उस भक्त के प्रति कोमलता से भरा है जिसने उन्हें अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

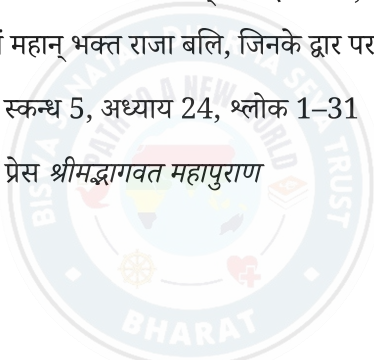
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्जम में पुनः आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिपूर्ण यात्रा। पंचम स्कन्ध के इस चौबीसवें अध्याय में, श्रीशुकदेव गोस्वामी राजा परीक्षित को सृष्टि के आश्चर्यों के बीच नीचे की ओर ले चलते हैं — पहले छाया-ग्रह राहु तक, जिसे भगवान् का घूमता हुआ चक्र सदा दूर रोके रहता है, और फिर एक-एक करके पृथ्वी के नीचे स्थित सात पाताल-लोकों में। ये

अंधकार के स्थान नहीं हैं, अपितु रत्नजड़ित प्रासादों और स्वर्ग से भी मधुर उद्यानों के लोक हैं — और इनके हृदय में निवास करते हैं महान् भक्त राजा बलि, जिन्हें भगवान् इतना प्रिय मानते हैं कि वे स्वयं उनके द्वार पर पहरा देते हैं। आइए, कोमलता से, विस्मय के साथ नीचे उतरें, और प्रत्येक लोक में भगवान् की कृपा के दर्शन करें।

अध्याय-परिचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 5 (पंचम स्कन्ध)
- अध्याय: 24 (चतुर्विंश अध्याय)
- अध्याय-शीर्षक: राहु और स्वर्ग-सदृश पाताल-लोक
- प्रमुख वक्ता: श्रीशुकदेव गोस्वामी (श्रीशुक), राजा परीक्षित को कथा सुनाते हुए
- प्रमुख श्रोता: राजा परीक्षित — और यह संवाद सूत गोस्वामी द्वारा नैमिषारण्य में एकत्रित ऋषियों को पुनः सुनाया जाता है
- मुख्य स्थल: सूर्य के नीचे के लोक — राहु ग्रह, आकाशीय लोक, तथा पृथ्वी के नीचे स्थित सात पाताल-लोक
- केन्द्रीय विषय: राहु की स्थिति और भगवान् का रक्षक चक्र, तथा सात देदीप्यमान पाताल-लोक अपने अधिपतियों सहित — जिनमें सर्वप्रमुख हैं सुतल में महान् भक्त राजा बलि, जिनके द्वार पर स्वयं भगवान् पहरा देते हैं
- प्रमुख श्लोक-सीमा: स्कन्ध 5, अध्याय 24, श्लोक 1–31
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण



पिछले अध्याय से

तेईसवें अध्याय में, श्रीशुक ने ऊपर स्थित ध्रुव-तारे का वर्णन किया, जिसके चारों ओर समस्त नक्षत्र-मण्डल घूमता है, तथा उस विशाल शिशुमार का — तारों के बीच अंकित भगवान् के डॉल्फिन-सदृश रूप का, जिसका मनीषी ध्यान करते हैं — साथ ही उस सायंकालीन प्रार्थना का, जिससे भक्तजन उन भगवान् की शरण लेते हैं जो लोकों के भ्रमण को धारण करते हैं। उन देदीप्यमान ऊँचाइयों से अब कथा नीचे की ओर मुड़ती है, सूर्य के नीचे के लोकों की ओर।

सूर्य के नीचे राहु और रक्षक चक्र

श्रीशुक ने कहा कि पुराणों के ज्ञाता कहते हैं कि सूर्य से दस हज़ार योजन नीचे राहु ग्रह विचरता है, किसी नक्षत्र के समान गति करता हुआ। उसका अधिष्ठाता देव जन्म से एक नीच असुर था, सिंहिका से उत्पन्न; फिर भी भगवान् की कृपा से उसने अमरत्व और ग्रह का पद पा लिया, यद्यपि वह इसके योग्य न था — यह भी उनकी कृपा का एक मौन आश्चर्य है।

सूर्य का प्रज्वलित मण्डल, श्रीशुक ने राजा से कहा, दस हज़ार योजन विस्तृत है, चन्द्रमा का बारह हज़ार, और राहु का तेरह हज़ार। अमृत-मन्थन के समय से, जब सूर्यदेव और चन्द्रदेव ने उसका छद्म प्रकट कर दिया था, राहु द्वेष पाले हुए है और जब भी वे दोनों निकट आते हैं, उन पर टूट पड़ता है।

यददस्तरणेर्मण्डलं प्रतपतस्तद्विस्तरतो योजनायुतमाचक्षते द्वादशसहस्रं सोमस्य त्रयोदशसहस्रं राहोर्यः पर्वणि तद्व्यवधानकृद्वैरानुबन्धः
सूर्याचन्द्रमसावभिधावति ॥ २ ॥

*yad adas taraṇer maṇḍalaṁ pratapatas tad vistarato yojanāyutam ācakṣate dvādaśa-sahasraṁ
somasya trayodaśa-sahasraṁ rāhor yaḥ parvaṇi tad-vyavadhāna-kṛd vairānubandhaḥ sūryā-
candramasāv abhidhāvati*

अर्थ: प्रज्वलित सूर्य का मण्डल दस हजार योजन विस्तृत माना जाता है, चन्द्रमा का बारह हजार, और राहु का तेरह हजार; अपने पुराने वैर को पाले हुए, राहु उनके संयोग और वियोग के समयों पर सूर्य और चन्द्रमा पर टूट पड़ता है। (स्कन्ध 5, अध्याय 24, श्लोक 2)

किन्तु वह कभी सफल नहीं होता। क्योंकि भगवान् ने उन दोनों देदीप्यमान ग्रहों की रक्षा के लिए उनके पास अपना प्रसिद्ध चक्र सुदर्शन रख दिया है — तेजस्वी और सदा घूमता हुआ। उस अग्निमय चक्र को देखकर, राहु लगभग एक मुहूर्त तक उसके सम्मुख खड़ा रहता है, काँपता हुआ, और फिर दूर से ही भाग जाता है। यही, श्रीशुक ने कहा, वह घटना है जिसे लोग ग्रहण कहते हैं — अंधकार की विजय नहीं, अपितु श्रीहरि के रक्षक अस्त्र के समक्ष एक असुर का भय।



छाया-ग्रह राहु, भगवान् द्वारा सूर्य और चन्द्रमा की रक्षा हेतु रखे गए सदा घूमते सुदर्शन चक्र से रुका हुआ, काँपता है और पीछे हट जाता है — यही है उस घटना का सच्चा अर्थ जिसे लोग ग्रहण कहते हैं (श्लोक 1-3)।

बीच के लोक: सिद्ध, यक्ष, और पृथ्वी

राहु से उतने ही योजन नीचे, श्रीशुक ने आगे कहा, सिद्धों, चारणों और विद्याधरों के लोक हैं — दिव्य शक्तियों से युक्त प्राणी, आकाशीय गायक और स्वर्गीय कलाकार। इनसे नीचे आकाशीय क्षेत्र फैला है, यक्षों, राक्षसों, पिशाचों, प्रेतों और भूतों का क्रीड़ास्थल, जहाँ तक वायु और मेघ पहुँचते हैं। और उससे सौ योजन नीचे यह हमारी पृथ्वी है, जो उतनी ऊँचाई तक फैली है जहाँ तक हंस, गीध, बाज़ और गरुड़ जैसे पक्षी उड़ सकते हैं।

सात पाताल-लोक

पृथ्वी के नीचे, श्रीशुक ने राजा परीक्षित से कहा, सात विशाल गह्वर हैं — पाताल-लोक — प्रत्येक एक-दूसरे से दस हज़ार योजन की दूरी पर, और प्रत्येक दस हज़ार योजन लम्बा-चौड़ा। उन्होंने उन्हें क्रम से नाम लेकर बताया।

उपवर्णितं भूमेर्यथासन्निवेशावस्थानमवनेरप्यधस्तात् सप्त भूविवरा एकैकशो योजनायुतान्तरेणायामविस्तारेणोपक्लृप्ता अतलं वितलं सुतलं तलातलं महातलं रसातलं पातालमिति ॥ ७ ॥

upavarṇitaṁ bhūmer yathā-sanniveśāvasthānam avaner apy adhastāt sapta bhū-vivarā ekaikaśo yojanāyutāntareṇāyāma-vistāreṇopakṣptā atalaṁ vitalaṁ sutalaṁ talātalaṁ mahātalaṁ rasātalaṁ pātālam iti

अर्थ: पृथ्वी के नीचे सात पाताल-लोक हैं, प्रत्येक दस हज़ार योजन की दूरी पर और समान लम्बाई-चौड़ाई के: अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल और पाताल। (स्कन्ध 5, अध्याय 24, श्लोक 7)

स्वर्ग से भी सुन्दर

हम ऐसे अधोलोकों की कल्पना अंधकारमय और भयावह रूप में कर सकते हैं, किन्तु भागवत हमें इसके विपरीत बताता है। वहाँ, गृहस्थों के रूप में, दैत्य, दानव और कद्रू से उत्पन्न सर्प निवास करते हैं, ऐसे घरों और क्रीड़ा-स्थलों में जो भोग में स्वर्ग के सुखों को भी पार कर जाते हैं। वहाँ अद्भुत शिल्पी मय द्वारा निर्मित नगर शोभित हैं, रत्नजड़ित प्रासादों और सभागृहों सहित, और ऐसे उद्यान जो स्वर्ग की शोभा को मलिन कर देते हैं, जिनकी झीलें कमलों और पक्षियों के मधुर स्वरों से जीवन्त हैं।

काल के विभाजन से उत्पन्न कोई भय वहाँ के निवासियों को नहीं सताता, क्योंकि वहाँ सूर्य और चन्द्रमा प्रकाश नहीं करते; इसके स्थान पर सर्पों की फणों पर जड़े महामणि समस्त अंधकार को दूर कर देते हैं, और कोई रोग या वृद्धावस्था उन्हें नहीं व्यापती, क्योंकि वे अद्भुत औषधियों और रसायनों से पुष्ट हैं। उन धन्य प्राणियों को मृत्यु एक ही कारण से आती है — भगवान् के चक्र, सुदर्शन के तेज से; और जिस क्षण वह चक्र प्रवेश करता है, असुर-स्त्रियों के गर्भ तक भय से गिर जाते हैं। इन देदीप्यमान गहराइयों में भी, भगवान् की उपस्थिति ही वह एकमात्र शक्ति है जिसके समक्ष सब कुछ नत होता है।



अंधकारमय या भयावह होने से कोसों दूर, पाताल-लोक अद्भुत शिल्पी मय द्वारा निर्मित रत्नजडित प्रासादों और मणि-प्रकाशित उद्यानों से जगमगाते हैं, स्वयं स्वर्ग से भी सुन्दर (श्लोक 7-12)।

अतल: बल का लोक

अतल में मय-पुत्र बल नामक असुर निवास करता है, जिससे, कहते हैं, छियानबे प्रकार की माया-विद्याएँ प्रकट हुईं, जिनमें से कुछ का प्रयोग आज भी मायावी करते हैं। एक बार जब वह जँभाई ले रहा था, उसके मुख से तीन वर्ग की स्त्रियाँ प्रकट हुईं, जो हाटक नामक एक रसायन से उस लोक में प्रवेश करने वाले पुरुष को स्वयं को सर्वशक्तिमान अनुभव कराती हैं — दस हजार हाथियों के बल से भरा हुआ, जिससे वह मत्त की भाँति गर्व करने लगता है — यह माया की अपनी कलाओं का लोक है, और इस बात की स्मृति कि मन कितनी सरलता से अपनी ही कल्पित शक्ति में बह जाता है।

वितल: भगवान् हाटकेश्वर

अतल के नीचे, वितल में, स्वयं भगवान् शिव निवास करते हैं, जो वहाँ हाटकेश्वर नाम से विख्यात हैं, अपने गणों से घिरे और ब्रह्मा की सृष्टि की वृद्धि हेतु भव नाम से देवी से संयुक्त। उनसे महानदी हाटकी निकलती है; और जहाँ वायु उसके जल पर अग्नि प्रज्वलित करती है, वह अग्नि उस नदी को पी जाती है और उसे पुनः स्वर्ण के रूप में बाहर निकाल देती है — हाटक नामक वह स्वर्ण, जिसे उन लोकों के असुर आभूषणों के रूप में धारण करते हैं।



वितल लोक में भगवान् शिव हाटकेश्वर रूप में निवास करते हैं, अपने गणों के बीच देवी से संयुक्त, जहाँ से वह हाटकी नदी बहती है जो हाटक नामक देदीप्यमान स्वर्ण प्रदान करती है।

सुतल: राजा बलि और भगवान् की कृपा

और अब हम इस अध्याय के सच्चे हृदय पर आते हैं — सुतल पर, और एक ऐसी आत्मा पर जो भगवान् को इतनी प्रिय है कि उसकी कथा इन समस्त आश्चर्यों के बीच से चमक उठती है। वितल के नीचे, आज भी समस्त भय से मुक्त, यशस्वी और पुण्यश्लोक राजा बलि, विरोचन के पुत्र, निवास करते हैं। कभी उन्होंने तीनों लोकों पर शासन किया; तब भगवान् ने, इन्द्र को प्रसन्न करने की इच्छा से, अदिति के गर्भ से अवतरित होकर बलि के समक्ष एक ब्रह्मचारी वामन बालक — वामन — के रूप में प्रकट होकर तीन पग भूमि माँगकर तीनों लोक वापस ले लिए। किन्तु यह कोई दण्ड न था। उसी कृपा से भगवान् ने बलि को सुतल में स्थान दिया और उन्हें इन्द्र से भी अधिक ऐश्वर्य से सम्पन्न किया, और वहाँ बलि अपने धर्म के निष्ठापूर्ण पालन द्वारा उन्हीं पूज्य भगवान् की आराधना करते हैं।

ततोऽधस्तात्सुतले उदारश्रवाः पुण्यश्लोको विरोचनात्मजो बलिर्भगवता महेन्द्रस्य प्रियं चिकीर्षमाणेनादितेर्लब्धकायो भूत्वा वटुवामनरूपेण पराक्षिप्तलोकत्रयो भगवदनुकम्पयैव पुनः प्रवेशित ... आस्तेऽधुनापि ॥ १८ ॥

tato 'dhastāt sutale udāra-śravāḥ puṇya-śloko virocanātmajo balir bhagavatā mahendrasya priyaṁ cikīrṣamāṇenāditer labdha-kāyo bhūtvā vaṭu-vāmana-rūpeṇa parākṣipta-loka-trayo bhagavad-anukampayaiva punaḥ praveśita ... āste 'dhunāpi

अर्थ: वितल के नीचे, सुतल में, आज भी समस्त भय से मुक्त होकर, यशस्वी और पुण्यश्लोक बलि, विरोचन के पुत्र, निवास करते हैं। भगवान् द्वारा तीनों लोकों से रहित किए जाने पर — जिन्होंने इन्द्र को प्रसन्न करने हेतु अदिति के गर्भ से जन्म लेकर एक ब्रह्मचारी वामन रूप धारण किया — वे उसी भगवान् की कृपा से पुनः यहाँ स्थापित हुए और इन्द्र से भी अधिक ऐश्वर्य से सम्पन्न हुए ... और आज भी वहीं निवास करते हैं। (स्कन्ध 5, अध्याय 24, श्लोक 18)

बलि जिस महान् सौभाग्य का भोग करते हैं, श्रीशुक ने बताया, वह मात्र उस भूमि-दान का फल नहीं है जो उन्होंने दिया था। वह इसलिए फूला क्योंकि वह दान परम भक्ति से स्वयं भगवान् वासुदेव को अर्पित हुआ था — जो प्रत्येक प्राणी की आत्मा हैं, साक्षात् उनके समक्ष आए; और ऐसा दान सीधे मुक्ति की ओर ले जाता है। भगवान् अपने ही नाम के प्रति इतने कोमल हैं कि उसका मन्द-से-मन्द उच्चारण भी चमत्कार कर देता है।

यस्य ह वाव क्षुतपतनप्रस्खलनादिषु विवशः सकृन्नामाभिगृणन् पुरुषः कर्मबन्धनमञ्जसा विधुनोति यस्य हैव प्रतिबाधनं
मुमुक्षवोऽन्यथैवोपलभन्ते ॥ २० ॥

yasya ha vāva kṣuta-patana-praskhalanādiṣu vivaśaḥ sakṛn nāmābhigṛṇan puruṣaḥ karma-bandhanam añjasā vidhunoti yasya haiva pratibāadhanam mumukṣavo 'nyathaivopalabhante

अर्थ: जो मनुष्य, छींकते, गिरते या लड़खड़ाते समय विवश होकर भी एक बार भगवान् के नाम का उच्चारण कर देता है, वह सहज ही कर्म के बन्धन को झटक देता है — वही मुक्ति, जिसे मुमुक्षु कहीं अधिक कठिन साधनों से प्राप्त करना चाहते हैं। (स्कन्ध 5, अध्याय 24, श्लोक 20)

किन्तु श्रीशुक ने इस कृपा में एक सूक्ष्म भेद भी जोड़ा, जिससे इसका चमत्कार साधारण दान के प्रतिफल के रूप में न समझा जाए। भगवान् सामान्यतः भक्त की भौतिक उन्नति को सीमित रखते हैं, क्योंकि सुख-सम्पत्ति प्रायः मन को उनसे विमुख कर देती है — यह अभाव के वेश में छिपी हुई एक करुणा है। सुतल में बलि का ऐश्वर्य सर्वथा भिन्न कोटि का है: यह उन्हें न तो इन्द्रिय-तृप्ति के लिए और न ही कर्म-फल के रूप में दिया गया, अपितु केवल इसलिए कि उनकी प्रेममयी सेवा माया की किसी छाया से रहित, निर्बाध चलती रहे। जो बाहर से ऐश्वर्य प्रतीत होता है, वह बलि जैसे परिपक्व भक्त के लिए, भगवान् द्वारा निरन्तर सेवा की परिस्थितियाँ रचने मात्र का साधन है — कभी उस सेवा का लक्ष्य नहीं (श्लोक 22)।

श्रीशुक ने वे स्मरणीय शब्द भी स्मरण किए जो बलि ने एक बार कहे थे। जब भगवान् ने, तीन पग माँगने के बहाने, तीनों लोक ले लिए थे और उन्हें एक पर्वत-गुहा में वरुण की रस्सियों से बाँध दिया था, तब बलि ने अपने खोए राज्य का शोक नहीं किया। उन्होंने इसके बदले इस बात का दुःख किया कि इन्द्र ने, बृहस्पति के परामर्श में रहते हुए भी, वामन के माध्यम से केवल तीन लोक माँगे, न कि भगवान् की अमूल्य सेवा — वे लोक जो एक मात्र मन्वन्तर के अन्त में हाथ बदल जाते हैं। उन्होंने अपने पितामह प्रह्लाद का स्मरण किया, जिन्होंने केवल भगवान् की सेवा माँगी, सिंहासन नहीं, और विनम्रता से सोचा कि उन जैसा कोई उस महान् आत्मा के पदचिह्नों पर चलने की आशा कैसे कर सकता है। यही एक सच्चे भक्त की दृष्टि है, जो समस्त लोकों के आधिपत्य को भगवान् की सेवा के अवसर के समक्ष कुछ नहीं मानता।

वस्तुतः बलि ने अपने दृढ़ विश्वास का मूल स्रोत भी बताया। अपने पितामह का स्मरण करते हुए उन्होंने कहा:

यस्यानुदास्यमेवास्मत्पितामहः किल वव्रे न तु स्वपित्र्यं यदुताकुतोभयं पदं दीयमानं भगवतः परमिति भगवतोपरते खलु स्वपितरि ॥ २५ ॥

yasyānudāsyam evāsmat-pitāmahaḥ kila vavre na tu sva-pitryaṁ yad utākutobhayaṁ padaṁ dīyamānaṁ bhagavataḥ param iti bhagavatoparate khalu sva-pitari

अर्थ: जब उनके अपने पिता का देहान्त हुआ, तब मेरे पितामह प्रह्लाद को स्वयं भगवान् ने उनके पिता का सिंहासन और भय-रहित मुक्ति, दोनों का वरदान दिया — फिर भी उन्होंने दोनों को त्याग कर केवल भगवान् के सेवकों की सेवा माँगी। (स्कन्ध 5, अध्याय 24, श्लोक 25)



सुतल में, राजा बलि अपने धर्म द्वारा पूज्य भगवान् की आराधना करते हैं, भगवान् की कृपा की स्मृति को हृदय में संजोए और सेवा को समस्त लोकों के आधिपत्य से ऊपर मानते हुए (श्लोक 18-26)।

बलि की सम्पूर्ण कथा, श्रीशुक ने वचन दिया, आगे विस्तार से कही जाएगी। और फिर उन्होंने वह आश्चर्य प्रकट किया जो इस अध्याय का शिरोमणि है — वह कारण जिससे बलि सुतल में समस्त भय से मुक्त निवास करते हैं।

तस्यानुचरितमुपरिष्ठाद्विस्तरिष्यते यस्य भगवान् स्वयमखिलजगद्गुरुनारायणो द्वारि गदापाणिरवतिष्ठते निजजनानुकम्पितहृदयो ... ॥ २७ ॥

tasyānucaritam upariṣṭād vistariṣyate yasya bhagavān svayam akhila-jagad-gurur nārāyaṇo dvāri gadā-pāṇir avatiṣṭhate nija-janānukampita-hṛdayo ...

अर्थ: उनकी कथा आगे विस्तार से कही जाएगी — बलि, जिनके द्वार पर साक्षात् परमेश्वर श्रीनारायण, समस्त लोकों के गुरु, हाथ में गदा लिए खड़े रहते हैं, अपने भक्तों के प्रति करुणा से द्रवित हृदय लिए ... (स्कन्ध 5, अध्याय 24, श्लोक 27)

समस्त लोकों के स्वामी — वे, जिनके अंगूठे से कभी दशमुख रावण दस हज़ार गुना दस हज़ार योजन दूर फेंक दिया गया था — उस भक्त के द्वार पर रक्षक बनकर खड़े होते हैं जिसने उन्हें अपना सर्वस्व दे दिया। यहाँ एक ही चित्र में भक्ति की समस्त मधुरता है: स्वामी अपने सेवक का सेवक बन जाता है।

तलातल: मय दानव

सुतल के नीचे, तलातल में, त्रिपुर का स्वामी मय नामक असुर-प्रमुख निवास करता है, जिसके तीनों नगर कभी भगवान् शिव ने तीनों लोकों के कल्याण के लिए भस्म कर दिए थे, फिर भी जिसने उसी भगवान् की कृपा से यहाँ स्थान पा लिया। समस्त मायावियों का आचार्य, महादेव शिव द्वारा चारों ओर से रक्षित, वह सुदर्शन के भय से मुक्त रहता है और उसका बड़ा आदर होता है।

महातल: सर्प-जातियाँ

तलातल के नीचे, महातल में, कद्रू से उत्पन्न बहुशीर्ष सर्पों का समूह निवास करता है, क्रोधवश नामक, जिनमें कुहक, तक्षक, कालिय और सुषेण प्रमुख हैं। यद्यपि वे विशालकाय हैं, वे गरुड़ से निरन्तर भयभीत रहते हैं, जो भगवान् विष्णु को अपनी पीठ पर धारण करते हैं; फिर भी वे अपने कुटुम्ब के साथ निश्चिन्त क्रीड़ा करते हैं — भय में भी भगवान् की व्यवस्था में धारण किए हुए।

रसातल और पाताल: नाग और वासुकि

महातल के नीचे, रसातल में, दिति और दनु के पुत्र निवास करते हैं, जो पणि कहलाते हैं, तीन वर्गों में — निवातकवच, कालेय, और हिरण्यपुर के निवासी। देवताओं के स्वाभाविक शत्रु, जन्म से बलवान् और साहसी, उनका गर्व केवल श्रीहरि के चक्र से दबता है; और इन्द्र की दूती सरमा के वैदिक भर्त्सना-वचनों से वे उस देवराज से भयभीत रहते हैं।

और सबसे नीचे, पाताल के अधोतम लोक में, नाग-लोक के अधिपति निवास करते हैं, जिनमें वासुकि प्रमुख हैं।

ततोऽधस्तात्पाताले नागलोकपतयो वासुकिप्रमुखाः शङ्खकुलिकमहाशङ्खश्वेतधनञ्जयधृतराष्ट्रशङ्खचूडकम्बलाश्वतरदेवदत्तादयो महाभोगिनो महामर्षा निवसन्ति येषामु ह वै पञ्चसप्तदशशतसहस्रशीर्षाणां फणासु विरचिता महामणयो रोचिष्णवः पातालविवरतिमिरनिकरं स्वरोचिषा विधमन्ति ॥ ३१ ॥

tato 'dhastāt pātāle nāga-loka-patayo vāsuki-pramukhāḥ śaṅkha-kulika-mahāśaṅkha-śveta-dhanañjaya-dhṛtarāṣṭra-śaṅkhacūḍa-kambalāśvatara-devadattādayo mahā-bhogino mahāmarṣā nivasanti yeṣām u ha vai pañca-sapta-daśa-śata-sahasra-śīrṣāṇāṁ phaṇāsu viracitā mahā-maṇayo rociṣṇavaḥ pātāla-vivara-timira-nikaraṁ sva-rociṣā vidhamanti

अर्थ: सबसे नीचे, पाताल में, वासुकि के नेतृत्व में नाग-लोक के अधिपति निवास करते हैं — शङ्ख, कुलिक, महाशङ्ख, श्वेत, धनञ्जय, धृतराष्ट्र, शङ्खचूड़, कम्बल, अश्वतर, देवदत्त और अन्य — विशाल फण वाले और उग्र स्वभाव के; और इन सर्पों की फणों पर जड़े देदीप्यमान महामणि, जो पाँच, सात, दस, सौ, यहाँ तक कि हजार शीशों वाले हैं, अपने तेज से पाताल के समस्त अंधकार को दूर कर देते हैं। (स्कन्ध 5, अध्याय 24, श्लोक 31)

इस प्रकार यह महान् अवरोहण प्रकाश की आभा में विश्राम पाता है, भगवान् का तेज लोकों के अधोतम तक पहुँचते हुए।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

भगवान् प्रत्येक स्तर पर अपनी सृष्टि की रक्षा करते हैं। राहु को सूर्य और चन्द्रमा से रोकने वाले सुदर्शन चक्र से लेकर गहनतम लोकों में उसी चक्र के भय तक, एक ही शक्ति समस्त लोकों को धारण करती है — भगवान् की रक्षक कृपा, ऊँचाइयों से गहराइयों तक उपस्थित।

कोई लोक उनकी कृपा की पहुँच से परे नहीं। पाताल-लोक रत्न-सौन्दर्य और रोग तथा वृद्धावस्था से मुक्ति से जगमगाते हैं, और सिंहिका से उत्पन्न एक असुर तक ग्रह के पद तक उठाया गया। हम जहाँ भी हों, उनकी करुणा हम तक पहुँच सकती है।

भगवान् अपने भक्त के सेवक बन जाते हैं। इस अध्याय की चरम महिमा है स्वयं श्रीनारायण का, हाथ में गदा लिए, राजा बलि के द्वार पर खड़ा होना — समस्त लोकों का स्वामी उसकी रक्षा करता है जिसने उन्हें सर्वस्व दे दिया, यह इस बात का सर्वोत्तम माप है कि भक्ति भगवान् को अपने प्रेमियों से कैसे बाँध देती है।

उनकी सेवा समस्त लोकों से बढ़कर है। बलि ने अपने खोए राज्य का नहीं, अपितु इसका शोक किया कि इन्द्र ने भगवान् की सेवा के बदले तीनों लोक माँगे। जो शासन एक मन्वन्तर के साथ बीत जाता है, वह भक्ति के धन के समक्ष कुछ नहीं।

हरिनाम तत्क्षण फल देता है। भगवान् के नाम का एक उच्चारण, लड़खड़ाते समय विवश होकर भी, कर्म के उस बन्धन को ढीला कर देता है जिसे साधक कहीं कठिन मार्गों से खोलने का श्रम करते हैं — समस्त शरणों में सबसे सरल और सबसे शक्तिशाली।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

हमारे नीचे स्थित लोकों की इस यात्रा में कुछ गहन आश्वासन है। हमने सोचा होगा कि अधोलोक अंधकार के स्थान होंगे; इसके स्थान पर हमें स्वर्ग से भी उज्ज्वल उद्यान, रत्नों के प्रासाद, और ऐसे प्राणी दिखाए जाते हैं जो न रोग जानते हैं न क्षय — और इन सबके केन्द्र में, स्वयं भगवान् का कोमल चित्र, अपने भक्त के द्वार पर पहरा देते हुए। सृष्टि का मानचित्र, मूलतः, पुरस्कार और भय की सीढ़ी नहीं है, अपितु एक ऐसा क्षेत्र है जो सर्वत्र भगवान् की कृपा से आप्लावित है। राजा बलि ने एक राज्य खोया और भगवान् को अपना द्वारपाल पाया, और स्वयं को अधिक धनी माना। यही भक्ति का विचित्र गणित है: जिसे संसार हानि कहता है, भगवान् से प्रेम करने वाला हृदय उसे अपना सबसे बड़ा लाभ पा सकता है। जब हम भी उनकी सेवा को उन बीत जाने वाली सत्ताओं से ऊपर मानना सीखते हैं जिनका पीछा हम करते हैं, तब हम पाते हैं कि कोई स्थान सचमुच नीचा नहीं जहाँ भगवान् द्वार पर खड़े होने को सहमत हों।

एक दैनिक भक्ति-साधना

आज, इस अध्याय की सबसे सरल और सबसे शक्तिशाली शिक्षा को हृदय में धारण कीजिए: हरिनाम का अनुपम महत्त्व। जब भी भगवान् का नाम आपके अधरों पर आए — प्रार्थना में जानबूझकर, अथवा किसी विस्मय या लड़खड़ाहट के क्षण में अनायास — उसे एक सचेत अर्पण बनने दीजिए। कृतज्ञ हृदय से कहिए, “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय,” यह स्मरण करते हुए कि यह नाम भगवान् को तीनों लोकों के दान से भी अधिक प्रिय है। और जब कोई हानि आप पर भारी पड़े, तब राजा बलि का स्मरण कीजिए, जिन्होंने एक राज्य खोया और भगवान् को अपने द्वार पर खड़ा पाया, और उस हानि को भी उनके चरणों में अर्पित कर दीजिए।

उपसंहार

पंचम स्कन्ध का चौबीसवाँ अध्याय हमें एक अद्भुत अवरोहण पर ले चलता है — छाया-ग्रह राहु से, जो भगवान् के चक्र से रोका हुआ है, आकाशीय लोकों और पृथ्वी के पृष्ठ से होते हुए, सात देदीप्यमान पाताल-लोकों में अपने अधिपतियों सहित, अतल के बल से लेकर पाताल के वासुकि और सहस्रफण नागों तक। किन्तु इन सबका हृदय है सुतल, जहाँ महान् भक्त राजा बलि समस्त भय से मुक्त निवास करते हैं, क्योंकि साक्षात् परमेश्वर श्रीनारायण उनके द्वार पर पहरा देते हैं। उस एक चित्र में समूचा अध्याय समाहित है: समस्त लोकों का स्वामी उसका प्रेममय रक्षक बन जाता है जिसने उन्हें सर्वस्व दे दिया — यह दिखाते हुए कि उनकी कृपा लोकों के अधोतम तक, और उन विनम्रतम हृदयों तक पहुँचती है जो उनकी ओर मुड़ते हैं।

श्रीमद्भागवतम् की दिव्य विद्या हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति को जागृत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

संदर्भ एवं आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण, पंचम स्कन्ध, चतुर्विंश अध्याय, “The position of Rahu etc., and the limits of the heavenlike subterranean regions।”
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज्ञान • विश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश-रूप में। यह किसी एक प्रकाशक के सतत अनुवाद अथवा टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक के संरक्षण अथवा समर्थन का कोई भाव अभिप्रेत नहीं है।



ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-5-chapter-24-rahu-and-the-subterranean-realms-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञान • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट